Dainik Prarthna (Hindi)

दैनिक प्रार्थना

श्रीमत्पदवाक्यप्रमाणपारावारीण,
वेदमार्गप्रतिष्ठापनाचार्य, निखिलदर्शनसमन्वयाचार्य,
सनातनवैदिकधर्मप्रतिष्ठापनसत्संप्रदायपरमाचार्य,
भक्तियोगरसावतार, भगवदनन्त श्रीविभूषित

जगद्गुरु १००८

स्वामि श्री कृपालु जी महाराज

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जगद्गुरु कृपालु परिषत्

जगद्गुरु कृपालु परिषत्

भक्ति धाम

मनगढ़ (कुण्डा) जिला प्रतापगढ़-17 (यू.पी.) इण्डिया

फोन : 05341-230282, 230442

www. jagadgurukripaluparishat.org (jkp.org)

ISBN : 978-93-80661-23-0

प्रथम संस्करण : 14 मार्च, फाल्गुन पूर्णिमा, 2006

द्वितीय संस्करण : मई 2010

सर्वाधिकार सुरक्षित © 2010

राधा गोविन्द समिति, नई दिल्ली

इस प्रकाशन का कोई भी भाग पूर्ण या आंशिक रूप से किसी भी रूप में इलैक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोग्राफिक अभिलेखन अथवा अन्य किसी भी प्रकार से प्रतिलिपि अथवा प्रसारित न किया जाय।

CO HT
RADHA G D SAMITI

— *प्रकाशक* —

राधा गोविंद समिति

गोलोक धाम एच. ए. एफ. (बी), पार्ट-3, सैक्टर-10, द्वारका,

नई दिल्ली-110075 फोन: 011-25081088

e-mail: rgs108del@yahoo.com

अनुक्रमणिका

गुरुः कृपालुर्मम शरणम्	1
आश्रमस्थ हेतु विशिष्ट नियम	2
जगद्गुरु आदेश	3
श्री राधाकृष्णाभ्यां नमः	4
भगवती माँ की आरती	5
जगद्गुरु की आरती	7
युगल सरकार की आरती	10
वन्दना	13
पद्मा माँ की आरती	19
श्री कृष्ण जी की आरती	21
श्री भानुदुलारी की आरती	22
आरती भानुदुलारी (बाल रूप)	23
आरती श्री कृष्ण (बाल रूप)	25
श्रीरामचन्द्र की आरती	27
राम जन्मोत्सव	28
साधक हेतु कतिपय स्मरणीय निर्देश	29
श्री जगद्गुरु मुखारविन्द से	31

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे राधे राधे राधे राधे
राधे राधे राधे राधे राधे राधे

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे राधे राधे राधे राधे
राधे राधे राधे राधे राधे राधे

गुरुः कृपालुर्मम शरणं, वंदेऽहं सद्गुरुचरणम्।
मंगलमपि मंगल करणं, वंदेऽहं सद्गुरुचरणम्।
माया मोहजाल हरणं, वंदेऽहं सद्गुरुचरणम्।
गोपी प्रेम भाव भरणं, वंदेऽहं सद्गुरुचरणम्।
कृपया पंचकोश जरणं, वंदेऽहं सद्गुरुचरणम्।
योगक्षेम वहन करणं, वंदेऽहं सद्गुरुचरणम्।
अशरण शरणं गुरु चरणं, वंदेऽहं सद्गुरुचरणम्।
राधा कृष्ण-प्रेम भरणं, वंदेऽहं सद्गुरुचरणम्।
प्रेम याचते नहि तरणं, वंदेऽहं सद्गुरुचरणम्।
त्रिगुण- त्रिताप - पाप हरणं, वंदेऽहं सद्गुरुचरणम्।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे राधे राधे राधे राधे

आश्रमस्थ हेतु विशिष्ट नियम

1. सर्वत्र, सर्वदा राधे नाम का श्वास–श्वास से जप करते रहो।

2. एक शब्द भी निरर्थक न बोलो।

3. किसी साधक के कटु वाक्य को भी फील न करो।

4. 6 घण्टे से अधिक न सोवो।

5. समय मिलने पर अपनी सेवा के अतिरिक्त भी सेवा करो।

6. स्वास्थ्य का ध्यान सदा रखो।

7. खाने, पीने, पहनने आदि में अत्यन्त सादगी का अभ्यास करो, किन्तु मात्रा से कम सेवन न करो।

8. हरि–गुरु सेवा का महत्व समान मानो एवं मानव देह का साफल्य मानो।

9. सर्वदा गुरु कृपा को महसूस करो। किन्तु स्वयं के दोषों को निकालते रहो।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

10. कभी उपर्युक्त नियम का उल्लंघन हो जाय तो शरण्य से क्षमा याचना युक्त आँसू बहाओ।

तुम्हारा

कृपालु

जगद्गुरु-आदेश

श्रीकृष्ण का माधुर्य-भाव युक्त निष्काम प्रेम प्राप्त कर, उनकी नित्य सेवा ही तुम्हारा लक्ष्य है।

वह दिव्य निष्काम प्रेम, गुरुकृपा द्वारा अंतःकरण-शुद्धि होने पर ही प्राप्त होगा।

वह अंतःकरण शुद्धि, गुरु द्वारा निर्दिष्ट साधना द्वारा ही संभव है।

साधना - श्रीराधाकृष्ण का रूपध्यान करते हुये (स्वेच्छा से बनाये हुये रूप में दिव्य-भावना रखना है) रो कर उनके नाम गुण लीलादि का संकीर्तन करो।

सदा श्रीकृष्ण को अपने साथ ही मानो।

मोक्ष पर्यंत की कामना छोड़कर केवल दिव्य शुद्ध प्रेम की कामना से ही प्रेम करो।

"वे ही मेरे हैं," इस भावना को निरंतर दृढ़ करो, एवं श्याममिलन की परम व्याकुलता पैदा करो।

परदोष दर्शनादि कुसंगों से बचो।

मानव देह का प्रत्येक क्षण अमूल्य मानो।

— मैं सदा तुम्हारा सहायक हूँ — तुम्हारा कृपालु

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्रार्थना

श्री राधाकृष्णाभ्यां नमः

श्री गुरवे नमः श्री गुरवे नमः श्री गुरवे नमः

आचार्यं मां विजानीयान्नावमन्येत कर्हिचित्।
न मर्त्यबुद्ध्याऽसूयेत सर्वदेवमयो गुरुः।।

हे परम प्रियतम पूर्णतम पुरुषोत्तम श्री कृष्ण! तुम से विमुख होने के कारण अनादिकाल से हमने अनन्तानन्त दुःख पाये एवं पा रहे हैं। पाप करते करते अन्तःकरण इतना मलिन हो चुका है कि रसिकों द्वारा यह जानने पर भी कि तुम अपनी भुजाओं को पसारे अपनी वात्सल्यमयी-दृष्टि से हमारी प्रतीक्षा कर रहे हो, तुम्हारी शरण में नहीं आ पाता।

हे अशरण शरण! तुम्हारी कृपा के बिना तुम्हें कोई जान भी तो नहीं सकता। ऐसी स्थिति में, हे अकारण करुण! पतितपावन श्रीकृष्ण! तुम अपनी अहैतुकी कृपा से ही हमको अपना लो।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हे करुणा सागर! हम भुक्ति-मुक्ति आदि कुछ नहीं माँगते, हमें तो केवल तुम्हारे निष्काम प्रेम की ही एकमात्र चाह है।

हे नाथ! अपने विरद की ओर देखकर इस अधम को निराश न करो।

हे जीवनधन! अब बहुत हो चुका, अब तो तुम्हारे प्रेम के बिना यह जीवन मृत्यु से भी अधिक भयानक है। अतएव

प्रेम भिक्षां देहि, प्रेम भिक्षां देहि, प्रेम भिक्षां देहि।

साकेत बिहारी श्री राघवेन्द्र सरकार की जय।

वृन्दावन बिहारी श्री यादवेन्द्र सरकार की जय।

श्रीमद्सद्गुरु सरकार की जय।

जय जय श्रीराधे जय जय श्रीराधे जय जय श्रीराधे।

भगवती माँ की आरती

आरति भगवति माँ की कीजै,
जय जय जननि जगद्गुरु की जै।
सुकृत कौन अस वेद बतायो,
जासों लाल कृपालुहिं पायो।
बनि जननी निज गोद खिलायो,
सब विधि हलरायो दुलरायो।
मोहिं निज सुत सेवा वर दीजै,
जय जय जननि जगद्गुरु की जै।
तेरो सुत मानत सब तेरो,
माँ इक काम करा दे मेरो ।
मोहिं सो ले बनाय निज चेरो,
रहिहौं ऋणी तोर बहुतेरो।
माँ हौं हूँ तव सुत सुन लीजै,
जय जय जननि जगद्गुरु की जै ।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अर्थ – साधक समुदाय! सभी श्रद्धा पूर्वक माँ भगवती जी की आरती करो जो कि जगद्गुरु श्री कृपालुजी महाराज की जन्मदात्री माता हैं। माँ! तुम्हारी सदा जय जयकार हो।

माँ! तुमने ऐसे कौन से वेद विदित शुभ कर्म किये थे, जिनके परिणाम स्वरूप जगद्गुरु श्री कृपालुजी महाराज को सुपुत्र रूप में प्राप्त किया और आपको माँ बनकर इनकी सभी बाल सुलभ चेष्टाओं का आनन्द प्राप्त करते हुए लालन पालन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

हे जगज्जननी माँ! मुझे भी कृपा करके अपने इन अलौकिक सुत की सेवा का वरदान दीजिये।

हे माँ! तुम्हारे ये पुत्र तुम्हारी प्रत्येक आज्ञा का पालन करते हैं। अतः हे माँ! मेरी भी एक प्रार्थना इन तक पहुँचा दीजिये कि मुझे अपना दास स्वीकार कर लें। हे माँ! मैं तुम्हारा हृदय से अत्यन्त आभारी रहूँगा।

हे माँ! मैं भी तो तुम्हारा पुत्र हूँ, अतः कृपा करके मेरी भी यह प्रार्थना स्वीकार कर लीजिये।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जगद्गुरु श्री कृपालु जी महाराज की माता भगवती की सदा जय जयकार हो।

जगद्गुरु की आरती

जयति जगद्गुरु गुरुवर की,
गावो मिलि आरती रसिकवर की।
गुरुपद–नख–मणि–चन्द्रिका प्रकाश,
जाके उर बसे ताके मोह तम नाश।
जाके माथ नाथ तव हाथ कर वास,
ताते होय माया मोह सब ही निरास।
पावे गति मति रति राधावर की,
गावो मिलि आरती रसिकवर की॥ 1॥

अरे मन मूढ़! छाँड़ु नारी नर हाथ,
गुरु बिनु ब्रह्म श्यामहूँ न देंगे साथ।
कोमल कृपालु बड़े कृपासिंधु नाथ,
पाके इन्हें आज तू अनाथ हो सनाथ।
इन्हीं के आधीन कृपा गिरिधर की
गावो मिलि आरती रसिकवर की॥ 2॥

भक्तियोग–रस–अवतार अभिराम,
करें निगमागम समन्वय ललाम।
श्यामा–श्याम नाम, रूप, लीला, गुण, धाम,
बाँटि रहे प्रेम निष्काम बिनु दाम।
हो रही सफल काया नारी नर की,
गावो मिलि आरती रसिकवर की॥ 3॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ललली लाल लीला का सलोना सुविलास,
छाया दिव्य दृष्टि बिच प्रेम का प्रकाश।
वैसा ही विनोद वही मंजु मृदु हास,
करें बस बरबस उच्च अट्टहास।
झूमि चलें चाल वही नटवर की,
गावो मिलि आरती रसिकवर की॥ 4॥

अर्थ – निवेदन है कि सभी साधक वृन्द सामूहिक रूप से प्रेम पूर्वक रसिकों में सर्वश्रेष्ठ जगद्गुरु श्री कृपालु जी महाराज की आरती गाओ। श्री मद् सद्गुरु सरकार की सदा जय जयकार हो।

आपके चरण–कमलों की नख मणियाँ अनन्तानन्त दिव्य ज्योति से प्रदीप्त हैं। अतः जो जीवात्मा इन्हें अपने हृदय में धारण कर लेता है उसका मोह रूपी अन्धकार सदा को समाप्त हो जाता है। जिसके सिर पर आप अपना वरद हस्त रख देते हैं उसकी माया निवृत्ति हो जाती है, और वह सद्गुरु कृपा प्राप्त जीव श्रीकृष्ण की गति, बुद्धि एवं दिव्य प्रेमानन्द को प्राप्त कर सदा सदा को धन्य हो जाता है।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अतः सभी साधक जन एक स्वर से प्रेमोन्मत्त होकर ऐसे रसिक शेखर गुरुदेव की आरती गाओ।

हे मूर्ख मन! तू सांसारिक सम्बन्धियों के आश्रय को छोड़ दे। तू अनादिकाल से अनाथ की भाँति चौरासी लाख योनियों में भटक रहा है आज ही इन गुरुदेव को अपना सर्वस्व मानकर इनकी शरणागति ग्रहण कर सनाथ बन जा।

इन गुरुदेव के बिना श्रीकृष्ण भी तेरा साथ नहीं देंगे।

ये गुरुदेव अतिशयातिशय कोमल, उदार एवं कृपा के अगाध समुद्र हैं और सबसे महत्त्वपूर्व बात तो यह है कि श्रीकृष्ण की कृपा भी इन्हीं के अधीन है-

गोपी प्रेम के मूर्तिमान रसावतार हैं। साथ ही सभी शास्त्रों वेदों का समन्वय बड़े ही मार्मिक एवं हृदयग्राही ढंग से करने में पारंगत हैं।

आप श्यामा-श्याम के नाम, रूप, लीला, गुण धाम की मधुरिमा से सब को सराबोर कर देते हैं। अत: आप लोक कल्याणार्थ निष्काम गोपी प्रेम अर्थात् मोक्षपर्यन्त की कामना से रहित एवं श्रीकृष्ण सुखैकतात्पर्यमयी भक्ति की अमूल्य निधि को बिना किसी मूल्य के वितरित कर रहे हैं। जिसे प्राप्त कर असंख्य व्यक्ति अपने मानव देह को कृतार्थ कर रहे हैं।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अत: हे भक्तजनों ! ऐसे रसिक शिरोमणि की आरती का गान करो।

आप लीला विग्रह श्री राधा-माधव के साकार स्वरूप होने के कारण उन्हीं युगल सरकार की लीला माधुरी से संयुक्त हैं एवं वही दिव्य प्रेमानन्द आपकी दृष्टि में छलकता है।

अपरिमेय दिव्य प्रेम सिन्धु में अवगाहन करने के कारण आपका हास विलास भी विमल, रससिक्त एवं उच्च मधुर अट्टहास के रूप में प्रकट होता है।

उन्हीं नटवर नागर की प्रेमोन्मत्त, मदमत्त चाल से आप चलते हैं।

हे प्रिय भक्तों! ऐसे रसिक शेखर गुरुदेव की आरती को भावमय होकर गाओ।

युगल सरकार की आरती

आरती प्रीतम, प्यारी की, कि बनवारी, नथवारी की।
दुहुँन सिर कनक-मुकुट झलकै,
दुहुँन श्रुति कुण्डल भल हलकै,
दुहुँन दृग प्रेम-सुधा छलकै,
चसीले बैन, रसीले नैन, गँसीले सैन,
दुहुँन मैनन मनहारी की ॥ 1॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

दुहुँनि दृग चितवनि पर वारी,
दुहुँनि लट-लटकनि-छवि न्यारी,
दुहुँनि भौं-मटकनि अति प्यारी,
रसन मुख पान, हँसन मुसकान, दसन दमकान,
दुहुँनि बेसर छवि न्यारी की ॥ 2 ॥

एक उर पीताम्बर फहरै,
एक उर नीलाम्बर लहरै,
दुहुँन उर लर-मोतिन छहरै,
कंकनन खनक, किंकिनिन झनक,नूपुरन भनक,
दुहुँन रुनझुन धुनि प्यारी की ॥ 3 ॥

एक सिर मोर-मुकुट राजै,
एक सिर चूनरि-छवि छाजै,
दुहुँन सिर तिरछे भल भ्राजै,
संग ब्रज-बाल,लाड़िली-लाल,बाँह गल डाल,
'कृपालु' दुहुँन दृग चारी की ॥ 4 ॥

अर्थ – हम प्रियतम श्यामसुन्दर एवं प्यारी श्री किशोरी जी की आरती करते हैं। दोनों के सिर पर सुवर्ण के मुकुट चमक रहे हैं। दोनों के कानों में सुन्दर कुण्डल हिल रहे हैं। दोनों की आँखों में प्रेमामृत रस छलक रहा है। दोनों की वाणी अत्यन्त मधुर है। दोनों के नेत्र अत्यन्त सरस हैं। दोनों के कटाक्ष अत्यन्त ही तीखे हैं। दोनों कामदेव के मन को भी हरने वाले हैं।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

मैं दोनों के परस्पर देखने पर बलिहार जाता हूँ। दोनों के घुँघराले बालों की छटा अत्यन्त ही निराली है। दोनों के भौहों के चलाने की रीति अत्यन्त ही आकर्षक है। दोनों के मुख में पान का रस है। दोनों का हँसना, मुस्काना मनमोहक है। दोनों के दाँतों की चमक अत्यन्त सुन्दर है। दोनों की बेसर झाँकी तो अत्यन्त ही निराली है।

श्री श्याम सुन्दर के वक्षस्थल पर पीताम्बर फहरा रहा है। श्री किशोरीजी के वक्षस्थल पर नीलाम्बर लहरा रहा है। तथा दोनों के वक्षस्थल पर मोतियाँ की लड़ियाँ झूम रही हैं। दोनों के कंकण, दोनों की किंकिणि एवं दोनों के नुपुर की रुनझुन ध्वनि अत्यन्त ही मनोहारिणी है।

श्री श्याम सुन्दर के सिर पर मोर-मुकुट सुशोभित है, श्री किशोरी जी के सिर पर सुन्दर चुनरी शोभायमान है एवं दोनों के सिर तिरछे होकर परस्पर मिले हुए शोभा दे रहे हैं। श्री'कृपालु' जी कहते हैं कि श्यामसुन्दर एवं किशोरी जी गले में परस्पर बाँह डाले हुए हैं, समीप में ही ब्रजांगनाएँ खड़ी हैं एवं प्रिया-प्रियतम एक दूसरे की ओर कटाक्षपात करते हुए देख रहे हैं।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

वन्दना

मत्प्रेयान् राधिकाप्रेयान् मद्धवो राधिकाधवः,
तस्मादपि गरीयान्यो कृपालुर्मे जगद्गुरुः।

गुरुं भजति श्रीकृष्णः श्रीकृष्णं भजते गुरुः,
सिद्धान्ततस्त्वभेदेऽपि कृपालुर्मे गुरुर्महान्।

अनुवाद – मेरे प्रियतम वे हैं, जो कि राधारानी के प्रियतम हैं। मेरे स्वामी वे हैं, जो राधारानी के स्वामी हैं। गुरु श्रीकृष्ण का भजन करते हैं, एवं श्री कृष्ण गुरु का भजन करते हैं। सिद्धान्तानुसार गुरु एवं भगवान् में कोई अन्तर नहीं है। फिर भी शास्त्रों ने गुरु को ही ऊँचा स्थान दिया है।

यस्य साक्षात् भगवति ज्ञानदीपप्रदे गुरौ।
मर्त्यासद्धीः श्रुतं तस्य सर्वं कुंजरशौचवत्॥

एष वै भगवान् साक्षात् प्रधान पुरुषेश्वरः।
योगेश्वरैर्विमृग्यांघ्रिर्लोकोऽयं मन्यते नरम्॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अनुवाद – सद्गुरु साक्षात् भगवान् हैं। वे हमारे हृदय में ज्ञान का दीप जलाते हैं। यदि कोई गुरु में प्राकृत मानव की बुद्धि करता है तो उसका साधना करना हाथी के स्नान के समान है। गुरु में यह भावना रखनी चाहिए कि वे ही समस्त प्रकृति तथा पुरुष के

ईश्वर, साक्षात् भगवान् हैं, जिस भगवान् की उपासना बड़े-बड़े योगी तथा मुनि लोग करते हैं।

यमुना निकट तटस्थित वृन्दावन कानने महारम्ये।
कल्पद्रुमतलभूमौ चरणं चरणोपरिस्थाप्य॥

तिष्ठंतं घननीलं स्वतेजसा भासयन्तमिह विश्वम्।
पीताम्बर परिधानं चन्दनकर्पूर लिप्तसर्वांगम्॥

आकर्णपूर्णनेत्रं कुण्डलयुगमण्डित श्रवणम्।
मंदस्मितमुखकमलं सकौस्तुभोदारमणिहारम्॥

वलयांगुलीयकाद्यानुज्ज्वलयन्तं स्वलंकारान्।
गलविलुलितवनमालं स्वतेजसापास्तकलिकालम्॥

गुंजारवालिकलितं गुंजापुंजान्विते शिरसि।
भुंजानं सह गोपैः कुंजांतर्वर्तिनं नमत॥

मन्दारपुष्पवासितमन्दानिल सेवित परानन्दम्।
मन्दाकिनीयुतपदं नमत महानन्ददं महापुरुषम्॥

सुरभीकृतदिग्वलयं सुरभिशतैरावृतः परितः।
सुरभीतिक्षपणमहासुरभीमं यादवं नमत॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अनुवाद - श्री यमुना जी के तट पर स्थित वृन्दावन की किसी अति मनोहर वाटिका में कल्पवृक्ष के नीचे की भूमि पर चरण पर चरण रखे श्री कृष्ण बैठे हैं, जो नवीन बादलों के सदृश श्याम वर्ण के हैं, पीताम्बर पहने हुए हैं एवं सारे शरीर में कर्पूर से

मिश्रित चन्दन का लेप किये हुए हैं। जिनके कर्ण पर्यन्त बड़े-बड़े नेत्र हैं, कानों में सुन्दर कुण्डल सुशोभित हैं, मुखारविन्द मन्द मन्द मुस्करा रहा है। जिनके वक्षस्थल पर कौस्तुभमणियुक्त सुन्दर मालायें सुशोभित हो रही हैं। जो अपनी कान्ति को दुगनी कर रहे हैं, जिनके गले में वनमाला लटक रही हैं, जिन्होंने अपने तेज के प्रभाव से कलिकाल को नष्ट कर दिया है, जिनका गुंजारवलि अलंकृत मस्तक गूँजते हुए भौरों से शोभायमान हो रहा है। किसी कुंज के भीतर बैठकर ग्वालबालों के साथ भोजन करते हुए उन श्रीकृष्ण का स्मरण करो, जो कल्पवृक्ष के फूलों की सुगन्ध से युक्त मन्द मन्द वायु से सुशोभित हैं, जो स्वयं परमानन्द स्वरूप हैं, जिनके चरणों में, भगवती भागीरथी विराजमान हैं। उन परमानन्ददायक श्रीकृष्ण का स्मरण करो, जिन्होंने समस्त दिशाओं को सुगन्धित कर रखा है, जो सैकड़ों कामधेनु गौओं से घिरे हुए हैं, जो देवताओं के भय को दूर करने वाले एवं भयानक राक्षसों को भी भयभीत करने वाले हैं, उन यदुनन्दन का स्मरण करो।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अशरण शरण महाप्रभो!

अशरण-शरण महाप्रभो, तुम स्वामी हम दास।
कीजै कृपा कृपालु मम, दीजै गुरु सहवास॥

हे अशरण को भी शरण देने वाले कृपालु महाप्रभो! आप सबके स्वामी हैं और हम आपके नित्य दास हैं। अतः हमें गुरुधाम में वास देने की कृपा कीजिये।

तुम दीनन रखवार हम, अहंकार अवतार।
अस करु कृपा कृपालु अब, दीन बनूँ सरकार॥

हे नाथ! आप दीनों की रक्षा करने वाले हैं और हम अहंकार के मूर्तिमान अवतार हैं। अतः हे दीनानाथ! ऐसी कृपा कीजिये कि मैं दीन बन जाऊँ।

हौं ऐसो हौं पतित जो, पतित न आपुहिं मान।
ऐसे पतित विचित्र को, पावन करु तब जान॥

हे नाथ! मैं ऐसा विचित्र पापात्मा हूँ जो स्वयं को पापी भी स्वीकार नहीं करता। अतः हे पतितपावन! ऐसे विलक्षण पापी को पावन कर दें तब जानूँगा कि आप वास्तव में पतितपावन हैं।

सबै भिखारी जगत के, जेतिक नातेदार।
दिव्य प्रेम आनन्द के, तुम इक साहूकार॥

संसार के सभी जीव आनन्द के भिखारी हैं और हम अनादिकाल से अज्ञान के कारण उन्हीं को अपना नातेदार सम्बन्धी मानकर उन्हीं से आनन्द की आशा करते रहे। किन्तु हे नाथ! अब आपकी कृपा से मैं यह समझ गया कि एक मात्र 'आप ही' मेरे हैं और उस दिव्य प्रेमानन्द के दाता एवं धनी भी एकमात्र आप

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ही हैं। अतः हे नाथ! इस भिक्षुक को भी प्रेमानन्द देने की कृपा करें।

धनि गुरुवर धाम निवास सुनो मन,
पुण्यन पुंज सों पाइये जू।
बनि दीन प्रपन्न रहो गुरु के,
नित सेवा सों ताहि रिझाइये जू।
मन ते हरि को गुरु को सुमिरो,
रसना सों सदा गुन गाइये जू।
क्षणभंगुर जीवन जानि मना,
छनहूँ जनि व्यर्थ गँवाइये जू।
सब धामन वारो वृन्दावन पै,
औ वृन्दावन हूँ गुरुधाम पै वारो।
जो गुरु के पद प्रीति जुरी तो,
भज्यो चलि आवेगो ब्रह्म बिचारो।
हैं हरि निर्मल भक्तन को,
गुरु हैं अधमों को उधारन हारो।
औरन को गुरु हों या न हों,
गुरु मेरो 'कृपालु' सुभाग हमारो॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

एक तत्वज्ञ अपने परम प्रिय गुरुधाम की पावन भूमि की महिमा के रहस्य को प्रकट करते हुए कहता है हे मन! सुनो, गुरुधाम में निवास अनन्त जन्मों के पुण्यों के उदय होने के बाद और सबसे महत्वपूर्ण कारण गुरुदेव की अकारण करुणा के परिणाम

स्वरूप प्राप्त होता है। अतः इस सौभाग्य को हृदय से स्वीकार करते हुए अत्यन्त दीनतापूर्वक एवं दास्य भाव को हृदय में धारण करते हुए गुरुदेव को अपने तन-मन-धन की सेवा द्वारा प्रसन्न करना ही तुम्हारा एक मात्र धर्म एवं कर्त्तव्य है।

गीतोक्ति के अनुसार भी-

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः॥

अर्थात् उस ईश्वर तत्त्व को जानने के लिये श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ महापुरुष की आवश्यकता है, जिसके शरण होकर सेवा पूर्वक जिज्ञासु बनकर 'ही' परमतत्त्व का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

इतना ही नहीं हरि एवं गुरु में अभेद मानकर सदा सर्वदा उनका मन से स्मरण एवं जिह्वा से गुणगान करते रहना है।

जीवन की क्षण भंगुरता का विशेष ध्यान रखते हुए एक क्षण भी व्यर्थ नहीं जाने देना है।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हे मन! सभी धामों में शिरोमणि वृन्दावन धाम है; किन्तु मैं वृन्दावन धाम को भी गुरुधाम पर न्यौछावर करता हूँ। यदि गुरुदेव के चरण-कमलों में तेरी प्रीति हो जायेगी तो फिर

सर्वशक्तिमान भगवान् श्रीकृष्ण भी भागे चले आयेंगे, शीघ्र कृपा करेंगे। भागवत के अनुसार **अहं भक्त पराधीनो।**

भगवान् तो निर्मल भक्तों का साथ देते हैं; किन्तु एकमात्र गुरुदेव ही अधमजनों का उद्धार करने वाले हैं।

अन्त में बड़ी आशा और विश्वास के साथ शरणागत कहता है कि और किसी के गुरुदेव हों या न हों, किन्तु मेरे गुरु जगद्गुरु कृपालु हैं यह मेरा अत्यधिक सौभाग्य है। मेरे गुरुदेव तो वास्तविकता के साथ-साथ नाम से भी कृपालु है।

पद्मा माँ की आरती

आरती माँ पद्मा की कीजै।
जय जय जय जगदम्बा की जै॥
लीलापुर में जनम लियो है,
रामकृपालुहिं वरण कियो है।
धन्य धन्य मनगढ़ धरणि जहँ,
सद्गुरु दम्पति वास कियो है।
मनगढ़ धाम वास मोहिं दीजै,
जय जय जय जगदम्बा की जै।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

माँग सिन्दूर अरुणिमा सोहत,
बिन्दी लाल भाल मन मोहत।
अनुपमेय माधुर्य गौर तनु,
जगद्‌गुरुहिँ मन मोह लियो है।
मोहूँ दोउ चरणन रज दीजै,
जय जय जय जगदम्बा की जै॥
नीली साड़ी जरद किनारी,
ता पै कंचुकि की छवि न्यारी।
कानन करण फूल हीरन को,
कंठी गल पिय चित्र छयो है।
मोहूँ दोउ अपनो करि लीजै,
जय जय जगदम्बा की जै॥
माँ मूरत निष्काम प्रेम की,
धर्म पतिव्रत अचल नेम की।
तुम्हरिहिं अनुकम्पा गुरुवर ने,
निज सेवा सौभाग्य दियो है।
मोहूँ दोउ सेवा वर दीजै,
जय जय जय जगदम्बा की जै॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे राधे राधे राधे राधे

श्री कृष्ण जी की आरती

आरती आरती-हारी की, कि वृन्दाविपिन बिहारी की
बँधी सिर तिरछी सी पगड़ी,
जड़ी मणि-मुक्तन मुकुट लड़ी,
अड़ी अड़बंग मोर- पँखुड़ी,
मुकुट की लटक, भृकुटि की मटक, लकुटि की अटक,
चटक केशर छवि न्यारी की ॥ 1 ॥
नाक बिच भल बुलाक हलकै,
कान कुण्डल झलमल झलकै,
दृगंचल चंचल रस छलकै,
अलक की हलक, पलक की छलक, कलक की झलक,
ललक देखन छवि प्यारी की ॥ 2 ॥
सुघर उपरैना उर राजै,
पीत पट अटपट छवि छाजै,
काछनी नट सी कटि भ्राजै,
नैन गति मैन, सैन अति पैन,बैन रति दैन,
लैन मति ब्रज नर नारी की ॥ 3 ॥
COPYRIGHT
पाणि मणिमय कंकण सोहै,
RADHA GOVIND SAMITI
कनक-किंकिनि-धुनि मन मोहै,
अनूपम की उपमा को है,
नन्द आनन्द,कन्द-आनन्द,सच्चिदानन्द,
'कृपालु', चन्द-तनु-कारी की ॥ 4 ॥

श्री भानुदुलारी की आरती

आरती भानुदुलारी की, कि श्री बरसाने वारी की।
बिराजैं सिंहासन श्यामा,
दिव्य श्री वृन्दावन धामा,
ढुरावैं चँवर सुघर बामा,
पलोटैं पग पूरनकामा,
लली पग अंक, चापि निःशंक, श्याम जनु रंक,
पाइ निधि पारस प्यारी की ॥ 1 ॥

गौर सिर कनक मुकुट राजै,
चन्द्रिका चारु सुछवि छाजै,
कुटिल कुन्तल अलि भल भ्राजै,
लखत जेहि शिखि कलाप लाजै,
माँग सिन्दूर, मोतियन पूर, सजीवन मूर,
ब्रह्म गोवर्धनधारी की ॥ 2 ॥

श्रवण बिच करणफूल झलकै,
COPYRIGHT
नासिका बिच बेसर हलकै,
RADHA GOVIND SAMITI
नयन बिच प्रेम सुधा छलकै,
बन्धु बल के लखि लखि ललकै,
चपल नथ-चमक, दसन-दुति-दमक, सुमुखि-मुख-रमक
मधुर मुसुकनि सुकुमारी की ॥ 3 ॥

मोतियन लर उर मणि माला,
चिबुक झलकत इक तिल काला,
शम्भु शुक दैं सँग कर ताला,
लली गुन गावति ब्रजबाला,
कबहुँ मुख मुरनि, कबहुँ दृग दुरनि, कबहुँ दृग जुरनि
कबहुँ सुधि भुरनि बिहारी की ॥ 4 ॥

किनारिन जरिन नील सारी,
कंचुकी कुमकुम रँग वारी,
चुरी कर कंकन मनहारी,
छीन कटि किंकिनि छवि न्यारी,
पायलनि पगनि, मिहावरि लगनि, बीछुवनि नगनि,
'कृपालु' सुकीर्ति-कुमारी की ॥ 5 ॥

आरती भानुदुलारी
(बाल रूप)

आरति कीर्ति कुँवरि की कीजै,
जय जय भानुनंदिनि की जै।
कौन सुकृति अस कीरति तेरी,
सुता योगमाया भइ तेरी।
तेरी सुता स्वामिनी मेरी,
अगनित उमा रमा हैं चेरी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मोहूँ निज सहचरि करि लीजै,
जय जय भानुनंदिनि की जै।।
जग जननी है लाली तेरी,
जग पालन कर लाली तेरी।
लाल स्वामिनी लाली तेरी,
सोइ लाली गति मति रति मेरी।
मोहिं 'कृपालु' टुक ब्रजरस दीजै,
जय जय भानुनंदिनि की जै।।

कीर्ति घर प्रकटीं कीर्तिकुमार।
विधि हरि हर कर जय जय कार।
करति स्वस्तिवाचन श्रुति चार।
ब्रह्मादिक आरती उतार।
नारद शारद कह बलिहार।
नेति नेति जेहि वेद पुकार।
सोइ बनि आईं भानुदुलार।
चिन्मय दिव्य गौर तनु धार।
छवि पर कोटि काम दउँ वार।
कुँवरि कृपा मूरति साकार।
दीनन आदर येहि दरबार।
करहु 'कृपालु' कृपा सरकार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

आरती श्री कृष्ण
(बाल रूप)

आरति यशुमति शिशु की कीजै।
जय जय जय नँदनंदन की जै॥
सुकृत कौन यशुमति अस तेरो।
जासों ब्रह्म भयो शिशु तेरो।
विधि हरि हरहुँ सेव्य शिशु तेरो,
स्वामि सखा सुत पति सोइ मेरो।
मोहिँ अपनाय कृपा अस कीजै,
जय जय जय नँदनंदन की जै।।
जगतपिता है यह शिशु तेरो,
मैं भी इक जग महँ शिशु तेरो।
भलो बुरो जैसो हूँ तेरो,
कोउ अवलंब और नहिं मेरो।
मोहिँ 'कृपालु' अपनो करि लीजै,
जय जय जय नँदनंदन की जै॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे राधे राधे राधे राधे

बलिहार यशुमति शिशु बलिहार।
शिशु पर कोटिन प्रानन वार।
शिशु आनन्दघन तन बलिहार।
शिशु तनु चिन्मय दिव्य निहार।
शिशु तनु नील वरन रिझवार।
शिशु को किय यशुमति शृंगार।
शिशु लखि कोटि काम दउँ वार।
शिशु लखि विधि हरि हर बलिहार।
शिशु अस्तुति कर वेदहुँ चार।
शिशु तनु चुवत प्रेम रस धार।
शिशु हित आशिष दें ब्रजनार।
शिशु चिरजीवें कह ब्रजनार।
शिशु लखि जोइ सुधि देय बिसार।
शिशु हित देति सखिन उपहार।
शिशु जयकार करें ब्रजनार।
भाल 'कृपालु' दिठौना डार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

श्रीरामचन्द्र की आरती

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भवभय दारुणम्।
नवकंजलोचन, कंजमुख कर कंज पद कंजारुणम् ।
कंदर्प अगणित अमित छवि, नवनील-नीरद सुंदरम्।
पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरम्।
भजु दीनबंधु दिनेश, दानव-दैत्यवंश-निकंदनम्।
रघुनंद आनँद कंद, कौशल चंद दशरथ-नंदनम्।
सिर मुकुट कुंडल तिलक, चारु उदारु अंग विभूषणम्।
आजानु भुज शरचापधर, संग्राम जित खरदूषणम्।
इति वदति तुलसीदास, शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनम्।
मम हृदय-कंज निवास कुरु, कामादि खलदल-गंजनम्।

मनु जाहि रांच्यो मिलइ सो वर सहज सुंदर साँवरो।
करुना निधान सुजान, सीलु सनेहु जानत रावरो।
एहि भाँति गौरि असीस, सुनि सिय सहित हिय हरषीं अली।
तुलसी भवानिहिं पूजि, पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चलीं।
सो- जानि गौरि अनुकूल, सिय हिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल बाम, अंग फरकन लगे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

श्रीराम जन्मोत्सव

भए प्रकट कृपाला दीनदयाला कौशल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनिमन हारी अद्‌भुत रूप बिचारी॥
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी।
भूषन वनमाला नयन बिसाला सोभा सिंधु खरारी।
कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि विधि करौं अनंता।
माया गुन ग्याना तीत अमाना वेद पुरान भनंता॥
करुणा सुखसागर सब गुन आगर जेहि गावहि श्रुति संता।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रकट श्री कंता॥
ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति वेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै॥
उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत विधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै॥
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा।
कीजै शिशुलीला अति प्रियशीला यह सुख परम अनूपा॥
सुन वचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा॥

बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

साधक हेतु कतिपय स्मरणीय निर्देश

1. सतर्क होकर साधना करने के लिए बैठो। यदि आलस्य आने लगे तो अपने आप खड़े हो जाओ। लेकिन शर्त यह है, चिन्तन श्यामसुन्दर का ही हो।

2. अपने इष्टदेव का गुणगान करो। ध्यान रखो, किसी का मन किसी के गुण पर ही रीझता है। जैसे संसार में कोई किसी के गुण पर ही रीझता है। (सुन्दर रूप भी एक गुण है), इसी प्रकार अधम–उधारनहार, पतित–पावन, भक्त-वत्सल आदि ठाकुर जी के अनन्त गुण हैं। इन गुणों का निरन्तर चिन्तन करें।

3. केवल गुणगान करने से भी काम नहीं चलेगा। गान तो गवैये भी करते हैं, लेकिन उनको भगवत्प्राप्ति नहीं होती। अतएव गुणगान करते समय तदनुसार भाव भी लाओ। जैसे, हम वस्तुतः अधम हैं, पतित हैं, अनन्त जन्मों के किये अनन्त पापों की गठरी सिर पर लिये हैं और वे अकारण करुण, भक्त-वत्सल, पतित–पावन, अधम–उधारनहार आदि हैं।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

4. हमें कीर्तन में नींद क्यों आती है ? क्योंकि हम अपने इष्टदेव का रूपध्यान नहीं करते, श्यामसुन्दर को प्यार नहीं करते। प्यार नहीं है, इसलिये गुणगान करते समय हृदय नहीं पिघलता व हम ऊँघने लगते हैं।

5. नेत्र बन्द करके रूपध्यान करो, क्योंकि प्राथमिक अवस्था में आँखें खोलकर कीर्तन करने से दूसरे लोग आते जाते दिखाई देते हैं, श्यामसुन्दर नहीं। रूपध्यान की अत्यन्त आवश्यकता है। रूपध्यान नहीं करेंगे तो शारीरिक क्रिया का कोई फल नहीं मिलेगा।

6. ठाकुर जी का जैसा भी चाहें, रूपध्यान बना लें। बाल्यावस्था का, किशोर रूप का, युवावस्था का। ठाकुर जी उसी रूप में मिल जायेंगे। लेकिन भगवान् को पहले देखकर फिर रूपध्यान करने वाले नास्तिक बन जायेंगे, क्योंकि हमारी प्राकृत आँखें 'प्राकृत राम' को देखेंगी, भगवान् राम को नहीं। **''चिदानन्दमय देह तुम्हारी, विगत विकार जान अधिकारी''।**

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अतः अधिकारी बनने के पूर्व देखने की बात न करो।

7. रूपध्यान करते हुए प्रिया प्रियतम के साथ जिस लीला में जाना चाहो, चले जाओ तथा उनके दिव्य मिलन व दर्शन के

लिये अत्यन्त तड़पन पैदा करो। लाख आँसू बहाओ, लेकिन किसी भी आँसू को तब तक सच्चा न मानो, जब तक स्वयं श्यामसुन्दर आकर उसे अपने पीताम्बर से न पोंछ लें। इतनी व्याकुलता पैदा करो कि नेत्र और प्राणों में बाजी लग जाये। एक-एक पल युग के समान लगने लगे। लेकिन यदि प्राणवल्लभ न आयें तो निराशा न आने पाये, प्रेमास्पद में दोष बुद्धि न आने पाये।

8. पूर्ण लाभ लेने हेतु साधना समय के अतिरिक्त समय में गुरु एवं ईश्वर को साक्षी व अन्तर्यामी रूप में नित्य अपने साथ अनुभव करते हुए, मौन नियम का पूर्ण पालन करो।

श्री जगद्गुरु मुखारविन्द से

जिस दिन किसी जीव को यह दृढ़ विश्वास हो जायगा कि भगवान् और भगवान् का नाम एक ही हैं, दोनों में एक सी शक्तियाँ हैं, एक से गुण हैं, उसी क्षण उसको भगवत्प्राप्ति हो जायेगी। स्वर्ण अक्षरों में लिख लो। भगवान् की इतनी बड़ी कृपा है कि वे कहते हैं कि मैं सर्वव्यापक हूँ, तू इसको मानता नहीं है, मैं गोलोक में रहता हूँ वहाँ तुम आ नहीं सकते, मैं तुम्हारे अन्तःकरण में तुम्हारे साथ बैठा हूँ इसका तुम्हें ज्ञान नहीं है, इसलिये लो मैं अपने नाम में अपने आपको बैठा देता हूँ। नाम में

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मैं मूर्तिमान बैठा हुआ हूँ, जिस दिन यह बात तुम्हारे मन में बैठ जायगी, उस दिन फिर एक नाम भी जब लोगे, जब एक बार राधे कहोगे तो कहा नहीं जायगा, वाणी रुक जायगी, मन डूब जायगा, कंठ गद्गद हो जायगा। फिर भगवत्प्राप्ति में क्या देर होगी? गुरु कृपा में क्या देर होगी? केवल इसी वचन पर विश्वास कर लो।

तुम्हारा

कृपालु

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI